

Shivaji University, Kolhapur
Question Bank For March, 2022 (Summer) Examination

B. A. (Part II), (Semester IV), (CBCS Pattern)

SANSKRIT (DSC), (Paper - VI)

Niti Literature (नीति साहित्य)

Sub. Code: 73440

प्रश्न १. योग्य पर्याय निवडून वाक्ये पुळा लिहा.

(१०)

१ भर्तुहरीने ----- निर्मिती केलेली आहे.

२ दान, उपभोग आणि ----- अशा संपत्तीच्या खर्च होण्याच्या तीन अवस्था आहेत.

र्थ झट्ट असतात.

(८) जन्म

३लोक स्वतः परहितार्थ झटत अस्तात.

(अ) दूर्जन (ब) सज्जन (क) सेवक (ड) पर

४ संकटांच्या भीतीने ----- लोक कार्याला हातच घालत नाहीत.

(अ) शूद्र (ब) दास (क) सेवक (ड) दूर्जन

५.अग्नीचे तोंड जरी उलटे करून खाली केले तरी त्याच्या ज्वाला कधीच ----- जात नसतात.

तिरप्या

६. उपायज्ञोऽल्पकायोऽपि न ----- परिभ्रयते ।

७. सत्पात्री ----- हा द्रव्याचा अलंकार आहे.

(अ) काम (ब) दान (क) मान (ड) धन

८. प्रायोपवेशन कोणी केले होते?

(५) बगळ्याने

९.माझा नमस्कार असो.

१०. सरोवराच्या किनाऱ्यावर बसून कोण रडत होता?

(अ) साप (ब) खेकडा (क) बगळा (ड)

कावळा

११. अस्ति कस्मिंश्चिदवनप्रदेशे नानाजलचरसनाथं महत् ----- |

- | | | | |
|------------|---------|------------|---------|
| (अ) प्राणी | (ब) चोर | (क) मृत्यु | (ड) पशू |
|------------|---------|------------|---------|
२६. नीतिशतकम् चा कर्ता ----- हा आहे.
- | | | | |
|---------|-----------|--------------|-----------|
| (अ) भास | (ब) भारवी | (क) भर्तृहरी | (ड) भट्टी |
|---------|-----------|--------------|-----------|
२७. नीतिशतकात किती विषयांचे विवेचन केलेले आहे?
- | | | | |
|---------|---------|----------|----------|
| (अ) दहा | (ब) वीस | (क) शंभर | (ड) अकरा |
|---------|---------|----------|----------|
२८. चुकीच्या सल्ल्यामुळे ----- धूळधाण होते.
- | | | | |
|------------|------------|------------|--------------|
| (अ) राजाची | (ब) मातेची | (क) मातेची | (ड) पुत्राची |
|------------|------------|------------|--------------|
२९. माणसांचे काय परोपकारांनी शोभून दिसतो?
- | | | | |
|---------|---------|----------|----------|
| (अ) देव | (ब) देह | (क) गुरु | (ड) सेवक |
|---------|---------|----------|----------|
३०. द्येयसिद्धी होईपर्यंत ठरविलेल्या कार्यापासून ----- लोक थांबत नाहीत.
- | | | | |
|----------|----------|------------|-------------|
| (अ) साधू | (ब) सेवक | (क) कनिष्ठ | (ड) श्रेष्ठ |
|----------|----------|------------|-------------|
३१. ----- हा सर्वांचा दागिना आहे.
- | | | | |
|-----------|---------------|---------|---------|
| (अ) ज्ञान | (ब) चारित्र्य | (क) दान | (ड) काम |
|-----------|---------------|---------|---------|
३२. ----- घरात येवो किंवा घरातून इच्छेनुसार बाहेर पडो.
- | | | | |
|-------------|-------------|---------|----------|
| (अ) लक्ष्मी | (ब) सरस्वती | (क) काम | (ड) सीता |
|-------------|-------------|---------|----------|
३३. श्रेष्ठ लोक कोणत्या मार्गावरून आपले एक पाऊलदेखील मागे घेत नाहीत ?
- | | | | |
|---------------|--------------|----------------|-----|
| (अ) कर्माच्या | (ब) दानाच्या | (क) न्यायाच्या | (ड) |
|---------------|--------------|----------------|-----|
- कामाच्या
३४. ----- हा वैभवाचा अलंकार आहे.
- | | | | |
|-------------|-------------|--------|--------------|
| (अ) साधुत्व | (ब) संपत्ती | (क) धन | (ड) श्रीमंती |
|-------------|-------------|--------|--------------|
३५. वाणीचा ----- हे पराक्रमाचे भूषण आहे.
- | | | | |
|-----------|----------|----------|----------|
| (अ) शांती | (ब) संयम | (क) आवाज | (ड) शब्द |
|-----------|----------|----------|----------|
३६. क्रोधशून्यता हे कोणाचे भूषण आहे?]
- | | | | |
|-------------|------------|-----------------|--------------|
| (अ) हानतेचे | (ब) राजाचे | (क) तपश्चर्येचे | (ड) नम्रतेचे |
|-------------|------------|-----------------|--------------|
३७. निष्कपटता हे ----- आभूषण आहे.
- | | | | |
|-----------|-------------|-------------|------------|
| (अ) धनाचे | (ब) धर्माचे | (क) कर्माचे | (ड) दानाचे |
|-----------|-------------|-------------|------------|
३८. कृष्णसर्पाला मारण्याचा उपाय कोणी सांगितला?
- | | | | |
|---------------|---------------|--------------|---------------|
| (अ) खेकड्याने | (ब) कावळ्याने | (क) बगळ्याने | (ड) कोल्हयाने |
|---------------|---------------|--------------|---------------|
३९. कुलीरक हे नाव कोणाचे आहे?
- | | | | |
|---------------|------------|--------------|-----|
| (अ) खेकड्याचे | (ब) सापाचे | (क) बगळ्याचे | (ड) |
|---------------|------------|--------------|-----|
- कावळ्याचे
४०. 'मी पाठीवर चढवून सरोवराकडे घेऊन जाऊ शकतो' हे उद्गार कोणाचे आहेत?

४१. अस्ति कस्मिंश्चत्प्रदेशे महान् ----- पादपः।

- (अ) आम्र (ब) अशोक (क) चंपक (ड) न्यग्रोध

४२. माणसांचे काय शास्त्रश्रवणाने शोभन दिसतात?

- (अ) कान (ब) नेत्र (छ) नाक (ड) पाय

४३. कशामळे मुलगा वाया जातो?

४४. वाईट पुत्रामुळे कोणाचे वाटोळे होते?

४५. सारे गुण कशाला चिकटलेले असतात?

४६. ज्याच्याजवळ बद्धी असते त्याच्याजवळच ----- असते.

४७. पचतंत्रात किती तंत्रे आहेत?

- (अ) तीन (ब) चार (क) पाच (ड) ट्वां

४८. हितोपदेशाचा मुलाधार ----- हा ग्रंथ आहे.

- (अ) महाभारत (ब) पंचतंत्र (क) पुराण
(द) ग्रन्थालय

४९. मित्रलाभाचे किंती परिक्षेद आहेत?

- (अ) चार (ब) सहा (क) पाच (ड) दो

५०. पंचतंत्रातील दसरे तंत्र ----- हे आहे

पृष्ठ -३ मुगालीन भाषांतर कथा (११)

^१ जातिर्यात् उसात्वलं गणगणस्तस्याप्यधो गच्छता-

३ ३
श्रीलं शैलतटात् पतत्वक्षिञ्जलः संदृश्यात् वहितवा॥

शोर्य वैरिणि बज्रमाश निपतत्यर्थोऽस्त नः केवलं

- येन केन विना गुणास्तुणलवप्रायाः समस्ता अमी
२. यस्यास्ति वितं स नरः कुलीनः
स पण्डितः स श्रुतवान् गुणाः ।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते ।
 ३. दौर्मन्त्यान्नृपतिर्विनश्यति यतिः संगात् सुतो लालनाद् ।
विप्रोऽनैद्ययनात् कुलं कुतनयाच्छीलं खलोपासनात् ।
हीर्मद्यादनवेक्षणादपि कृषिः स्नेहः प्रवासाश्रया-
न्मैत्री चाप्रणयात् समृद्धिरनयात् त्यागात् प्रमादादध्यनम् ॥
 ४. परिक्षीणः कश्चित् स्पृहयति यवानां प्रसृतये
स पश्चात् संपूर्णः कलयति धरित्रीं तृणसमाम् ।
अतश्चानेकान्ता गुरुलघुतयार्थेषु धनिना-
मवस्था वस्तूनि प्रथयति च संकोचयति च ।
 ५. यद् धात्रा निजभालपट्टलिखितं स्तोकं महद् वा धनं
तत् प्राप्नोति मरुस्थलेऽपि नितरां मेरौ च नातोधिऽकम् ।
तद् धीरो भव वितवत्सु कृपणां वृतिं वृथा मा कृथाः
कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो गृहणाति तुल्यं जलम्
 ६. एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थान् परित्यज्य ये
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये ।
तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ॥
 ७. क्षीरेणात्मगतोदकाय हि गुणा दत्ताः पुरा तेऽखिलाः
क्षीरोत्तापमवेक्ष्य तेन पयसा स्वात्मा कृशानौ हुतः ।
गन्तुं पावकमुन्मनस्तदभवद् दृष्ट्वा तु मित्रापदं
युक्तं तेन जलेन शाम्यति सतां मैत्री पुनस्त्वीदशी ॥
 ८. तृष्णां छिन्दिथ भज क्षमा जहि मदं पापे रतिं मा कृथाः
सत्यं ब्रूहयनुयाहि साधुपदवीं सेवस्व विद्वज्जनम् ।
मान्यान् मानय विद्विषोऽप्यनुनय प्रख्यापय प्रश्रयं
कीर्तिं पालय दुःखिते कुरु दयामेतत् सतां चेष्टितम् ॥
 ९. क्वचिद् भूमौ शायी कचिदपि च पर्यक्षयनः
क्वचिच्छाकाहारः क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः ।
क्वचित् कन्थाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो
मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् ॥
 १०. निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु

- लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
 अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
 न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥
११. ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो
 जानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्र व्ययः ।
 अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता
 सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ।
१२. अस्ति कस्मिंश्चित्प्रदेशे महान्न्यग्रोधपादपः । तत्र वायसदम्पती प्रतिवसतः स्म । अथ तयोः प्रसवकाले
 वृक्षविवरान्निष्क्रम्य कृष्णसर्पः सदैव तदपत्यानि भक्षयति । ततस्तौ निर्वदादन्यवृक्षमूलनिवासिनं
 प्रियसुहृदं शृगालं गत्वोचतुः—'भद्र, किमेवंविधे सञ्जात आवयोः कर्तव्यं भवति ।
१३. अस्ति कस्मिंश्चिद्वनप्रदेशे नानाजलचरसनाथं महत्सरः । तत्र च कृताश्रयो बक एको वृद्धभावमुपागतो
 मत्स्यान्व्यापादयितुमसमर्थः । ततश्च क्षुत्क्षामकण्ठः सरस्तीर उपविष्टो मुक्ताफलप्रकरसदैरश्रुप्रवाहै-
 धरातलमभिषिञ्चन् रुरोद । एकः कुलीरको नानाजलचरसमेतः समेत्य तस्य दुःखेन दुःखितः
 सादरमिदम्—
१४. अथ तत्क्षणात्काकः काकी च तदाकात्मेच्छयोत्पत्तितौ । ततश्च काकी किञ्चित्सरः प्राप्य यावत्पश्यति,
 तावत्तन्मध्ये कस्याचिद्राजोऽन्तःपुरं जलासन्नं न्यस्तकनकसूत्रं मुक्तमुक्ताहारवस्त्राभरणं जलक्रीडां
 कुरुते । अथ सा वायसी कनकसूत्रमेकमादाय स्वगृहाभिमुखं प्रतस्थे । ततश्च कञ्चकिनो वर्षवराश्च
 तन्नीयमानमुपलक्ष्य गृहीतलगुडाः सत्वरमनुययुः ।
१५. तदेतत्सरः स्वल्पतोयं वर्तते । शीघ्र शोषं यास्यति । अस्मिन् शुष्के यैः सहाहं वृद्धिं गतः सदैव क्रीडितश्च
 ते सर्वे तोयाभावान्नाशं यास्यन्ति । ततेषां वियोगं द्रष्टुमहमसमर्थः । तेनैतत्प्रायोपवेशनं कृतम् । साम्प्रतं
 सर्वेषां स्वल्पजलाशयानां जलचरा गुरुजलाशयेषु स्वस्वजनैर्नीयन्ते ।

प्रश्न - 3. विवेचक परिच्छेद

(१५)

- | | |
|---------------------------------|---------------------------|
| १. भर्तृहरीची भाषाशैली | ११. पंचतंत्रातील विषय |
| २. विष्णुशर्मा यांची भाषाशैली | १२. नीतिशतकातील दृष्टांत |
| ३. नारायण पंडित यांची भाषाशैली | १३. पंचतंत्राचे महत्व |
| ४. नीतिशतकातील शिकवण | १४. भर्तृहरीची ग्रंथसंपदा |
| ५. पंचतंत्र | १५. पंचतंत्रातील विचार |
| ६. नीतिशतकातील व्यावहारिक दाखले | १६. हितोपदेशाची शिकवण |
| ७. नीतिकथा साहित्य | १७. पंचतंत्रातील शिकवण |
| ८. हितोपदेश | १८. परोपकारपद्धती |
| ९. नीतिशतकातील सुभाषिते | १९. अर्थपद्धती |
| १०. नीतिशतकातील पौराणिक संदर्भ | २०. धैर्यपद्धती |

- | | |
|------------------------------|----------------|
| २१. नीतिशतकातील विषय | २४. कर्मपद्धती |
| २२. पंचतंत्रातील मानवीमूल्ये | २५. नीतिशतक |
| २३. नीतिशतकातील नीतिमूल्ये | |

प्रश्न -४. मोठे प्रश्न (१५)

१. भर्तृहरीचे जीवनचरित्र, काळ आणि ग्रंथसंपदा यावर निबंध लिहा.
 २. विष्णुशर्म्याचे जीवनचरित्र, काळ आणि ग्रंथसंपत्ती यावर सविस्तर टिपण लिहा.
 ३. नारायणपंडित यांचे जीवनचरित्र, काळ आणि ग्रंथसंपत्ती यावर सविस्तर निबंध लिहा.
 ४. नीतिकथासाहित्य यावर सविस्तर निबंध लिहा.
 ५. भर्तृहरीविरचित नीतिशतकातील परोपकारपद्धती सोदाहरण स्पष्ट करा.
 ६. विष्णुशर्माविरचित पंचतंत्रामधील मित्रभेद विभागात आलेल्या बगळा आणि खेकडा या कथेतील विचार स्पष्ट करा.
 ७. विष्णुशर्माविरचित पंचतंत्रामधील मित्रभेद विभागात आलेली कावळ्याचे कुटुंब आणि कृष्णसर्प या कथेतील शिकवण कथन करा.
 ८. नीतिशतकातील शिकवण यावर सविस्तर निबंध लिहा.
 ९. कर्मणे तस्मै नमः हे वाक्य कर्मपद्धतीच्या आधारे स्पष्ट करा.
 १०. सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ते । हे वाक्य अर्थपद्धतीच्या सहाय्याने स्पष्ट करा.
-